







## संपादकीय

## ट्रेड वॉर का द्वितीयक प्रभाव

इस साल की पहली तिमाही में अमेरिकी अर्थव्यवस्था 0.3 प्रतिशत सिकुड़ी। विशेषज्ञों के मुताबिक इसका कारण ट्रेड वॉर का द्वितीयक प्रभाव है। इसका प्राथमिक प्रभाव तो अगली तिमाहियों में देखने को मिलेगा। तब और बुरी खबरें आ सकती हैं। डॉनल्ड ट्रंप के छेड़े व्यापार युद्ध का पहला बड़ा झटका अमेरिकी अर्थव्यवस्था को लगा है। 2025 की पहली तिमाही में अमेरिकी अर्थव्यवस्था 0.3 प्रतिशत सिकुड़ गई। विशेषज्ञों के मुताबिक इसका कारण ट्रेड वॉर का द्वितीयक प्रभाव है। इसका प्राथमिक प्रभाव तो अगली तिमाहियों में देखने को मिलेगा। द्वितीयक प्रभाव से मतलब है कि आयात शुल्क में भारी बढ़ातीरी की संभावना को देखते हुए कंपनियों ने जनवरी से ही आयात की मात्रा बढ़ा दी। उधर उपभोक्ताओं ने चीजों की किल्हत और महांगई बढ़ने की आशंका में जरूरत से ज्यादा खरीदारियां की हैं। ताजा आंकड़ों के मुताबिक पहली तिमाही में उपभोक्ता व्यय में 1.8 प्रतिशत का इजाफा हुआ। तो चूंकि नियांत की तुलना में आयात बहुत तेजी से बढ़ा और उपभोक्ता के आंकड़ों में झलका है। यानी जहां आयात बढ़ने के कारण व्यापार घाटा बढ़ने से जीड़ीपी के वृद्धि दर घटी, वहीं उपभोक्ता खर्च बढ़ने से उसे सहारा मिला। लेकिन ये दोनों परिघटनाएं तात्कालिक हैं। बाजार पर टैरिफ का असर असल में आगे जाहिर होगा। इससे बढ़ती बेचैनी अमेजन जैसी बड़ी कंपनियों की प्रतिक्रिया में भी दिखने लगी है। नकारात्मक मूड के प्रभाव से वित्तीय बाजारों में पहले से ही भारी गिरावट आ चुकी है। अब ट्रंप ने इसकी जिम्मेदारी पूर्व बाइडेन प्रशासन पर डाल कर उसके राजनीतिक प्रभाव से बच निकलने का प्रयास किया है। बुधवार को एक सोशल मीडिया पोस्ट में उन्होंने कहा कि 'अभी जो स्टॉक एक्सचेंज है, वह बाइडेन का है, मेरा नहीं।' ट्रंप ने दलील दी कि वे 20 जनवरी को सत्ता में आए और उनके फैसलों का असर होने में अभी समय लगेगा। उनका दावा है कि जब ये असर होगा, अमेरिका में सुख-समृद्धि लौट आएगी। मगर वे इस तथ्य को नजरअंदाज कर गए कि शेयर और बॉन्ड बाजारों में गिरावट मुख्य रूप से 25 फरवरी के बाद शुरू हुई। उत्पादन और वितरण की अर्थव्यवस्था पर उसका क्या असर होगा, यह तो आने वाले महीनों में जाहिर होगा। इस मामले में ट्रंप के आकलन से अर्थशास्त्री सहमत नहीं हैं। दरअसल असलियत की पहली झलक पहली तिमाही के आंकड़ों से मिल गई है।

(सुधाकर आशावादी - विभूति फीचर्स)



देश में विशेषज्ञारी एक विकट समस्या है। इस समस्या को मुद्दा बनाकर सक्षर बदल दी जाती है, लेकिन बाबाओं के मायाजाल की कहनीनियां उस समय अधिक विस्तार पाती हैं, जब विशेषज्ञारी बाबा के प्रवचन में कोई घटना दुर्घटना हो जाए।

किसी बाबा के चरित्र पर उंगाई उठाई जाए, बाबा के फौजी चमत्कारों की पोल खोली जाए, अन्यथा जब तक बाबा पर कोई अरोग न लगे, बाबा के प्रवचन के बाद अंधे भीड़ बाबा की चरण रज लेने की चाह में बाबा के अन्य भक्तों के पैरों तले न रौंदी जाए, तब तक बाबा का राज खुला ही नहीं। जब तक बाबा का राज पास न हो, तब तक बाबा के वैष्णव में कोई भक्त हो जाए। जिसमें जितना कौशल है, वह अपने व्यापार के पेट की भूख मिटा रहा है। यहीं जीवन का सच है कि परिवार चलाने के लिए लोग भूल जाते हैं छक्की, उसे केवल यद रहनी है नन, तेल लकड़ी। अब ऐसे ही किसी धूमे की चाची बर्कें, जो बाबा महीने चलता है। कभी मंदा नहीं पड़ता। होंगे लगे न फिटकरी सिफ़र नाटक का खेल, जब बाबाओं की धांधली, अन्य धूमें सब फैल, यह उक्ति यूँ ही नहीं बनी है। यह उनके लिए बनी है, जिन्हें लोगों को भ्रमित करने की कला आती है। जिनको कला के मायाजाल में फँसकर व्यक्ति देख परिवार का मोह छोड़कर उन्हें की शरण में चला जाता है। अपने अपने पति और बच्चों का योह छोड़कर उनके देख परिवार को मायाजाल में हो जाए। इसका असर अपने पति और बच्चों को प्राथमिकता देने लगती है। बाबा ऐसा शब्द है, जिसका स्मरण करते ही धीरे गम्भीर एवं अनुचित चेहरा आँखों में उभर आता है। परिवार के मुख्यों की भी बाबा की संज्ञा नहीं जाती है और सभी में प्रवचन करने वाले की भी। आजकल बाबा न पांच सितारा होता ही कि तरह विलासिता पूर्ण खुब सुखियों से सुनसिज्जा आप्रव्यों में निवास करने लगे हैं तथा लाजुरी बाबाओं के कफिले संग चलने लगे हैं। बाबाओं के ठाठ बाट देखकर बाबा बनने की ओर भला को नहीं बढ़ा जाता। ये यह धूमों से ज्यादा बाबा को छान रहे हैं। इसका लिए बाबा को आडुकल अधिक डिमांड में है। इसका व्यापार धारण करना और लाजुरी दाढ़ी बढ़ाना अब बाबा के ड्रेस कोड का हिस्सा नहीं रहा। बाबा सफारी सुर्य या शट पैट या किसी भी प्रकार के परिधान धारण करने के लिए चाहत है। इनका अवश्य कहि कि यह और चमत्कार की अकलाकृत फैलाकूर बाबा को मोनोकमाना पूर्ण करते हैं। बाबा नाटक के ठाठ बाट देखकर बाबा बनने की ओर भला को नहीं बढ़ा जाता। बाबा सफारी धूमों की अपराह्न रुक्मिणी रोग दूर करने की शक्ति का बोध करना पड़ता है। ऐसे में बाबा के दिलाही पर रखे गए चेलों की खास भूमिका होती है। यहीं बाबा न जल नहीं, अपितु औपचि युक्त अमृत उगलते हैं।

## बाबागिरी का धंधा कभी न हो मंदा

(सुधाकर आशावादी - विभूति फीचर्स)

## सेना, सरकार और नागरिक सहयोग से ही

## संभव है आतंक का मुकाबला

(विवेक रंजन श्रीवास्तव-विनायक फीचर्स)



भारत ने हाल ही में पाकिस्तान स्थित आतंकी टिक्काओं पर ऑपरेशन सिंदूर के तहत सटीक मिसाइल हमलों से पाकिस्तान के कश्मीर में किए। आतंक का बेतरान बदला दिया। यह कार्रवाई न केवल भारतीय सेना की सैन्य कुशलता का प्रतीक है, बल्कि आतंकवाद के खिलाफ देश की स्पष्टता की दर्शकी है। किंतु आतंक के विरुद्ध इस तरह के आपरेशन सफल तभी होते हैं जब सेना, सरकार और नागरिकों के बीच समर्थ्य का एक सशक्त ढाँचा मौजूद हो। आतंकवाद से नहीं, बल्कि राष्ट्र के नागरिकों की सजाती, सद्व्यापी और गृहस्थावित से भी जीती जाती है।

आतंकवाद के खिलाफ देश की स्पष्टता

भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर जैसे अधियायों के माध्यम से यह साबित किया है कि वह भारत पर किसी आक्रमण या आंकड़ों द्वारा आतंकी टिक्काओं का मुहोड़ा जवाब देने में सक्षम है। सेना की यह तात्काल केवल हृदययों की तात्काल नहीं, बल्कि उच्चतरीय रणनीति, खुफिया जानकारी और साहस का परिणाम है। सेना के जवान सीमाओं पर दिन-रात तैनात रहकर देश की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। 2016 के साजिकल स्ट्राइक और 2019 के बालाकोट एपरेशन के द्वारा जैसे ऑपरेशन एक सैन्यी नीति के रूपान्तरित किया गया है।

सरकार का वायिच

नीति निर्माण से लेकर वैश्विक कूटनीति और सेना को छूट देना सरकार का वायिच है। सेना को योजनावित और ताकाती टिक्काओं की भूमोड़ जवाब देने में सक्षम है। सेना की यह तात्काल केवल हृदययों की तात्काल नहीं, बल्कि उच्चतरीय रणनीति, खुफिया जानकारी और साहस का परिणाम है। सेना के जवान सीमाओं पर दिन-रात तैनात रहकर देश की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

नागरिकों की जिम्मेदारी

नागरिक सहयोग सुरक्षा की तीसरा स्तर भूमिका के लिए एक रैपर के रूप में कार्रवाई की नीति है। नागरिकों को जीमीनी जानकारी हो सकती है। उदाहरण के लिए, जम्मू-कश्मीर में कई बार ग्रामियों ने सुरक्षा बलों की रेतिलापन भूमिका निर्धारित की है। 'आवाज की आवाज' जैसे अधिकारी इसी सहयोग को बढ़ावा देते हैं। आपराह्न जागरूकता और एकता आतंकवाद के सबसे बड़ी खबर है। 2008 के मुक्के हालों के बाद देशपर में एक जूनूर्त का जो उसके द्वारा बढ़ावा देने की ओर आपराह्न जागरूकता और एकता के सबसे बड़ी खबर है।

आतंकवाद की वैश्विक भूमिका निर्धारित है।

नागरिकों की जिम्मेदारी

नागरिक सहयोग सुरक्षा की तीसरा स्तर भूमिका के लिए एक रैपर के रूप में कार्रवाई की नीति है। नागरिकों को जीमीनी जानकारी हो सकती है। उदाहरण के लिए जम्मू-कश्मीर में कई बार ग्रामियों ने सुरक्षा बलों की रेतिलापन भूमिका निर्धारित की है। 'आवाज की आवाज' जैसे अधिकारी इसी सहयोग को बढ़ावा देते हैं। आपराह्न जागरूकता और एकता आतंकवाद के सबसे बड़ी खबर है। 2008 के मुक्के हालों के बाद देशपर में एक जूनूर्त का जो उसके द्वारा बढ़ावा देने की ओर आपराह्न जागरूकता और एकता के सबसे बड़ी खबर है।

आतंकवाद की वैश्विक भूमिका निर्धारित है।







